गिलहरी

मुकेश कुमार शर्मा
जे.ई. (वरिष्ठ ग्रेड)
अनुरक्षण प्रभाग, रा.ज.स.

नन्हीं गिलहरी हमें बताओं
बिल्कुल मत तुम राज छिपाओ
कहाँ से लाई सुन्दर धारी
लगती हो तुम कितनी प्यारी
लंका पर जब करी चढ़ाई
सागर तीरे सेना आई
कैसे जाये सिन्धु के पार
गहराई थी, अथाह अपार
कहाँ राम ने सेतु बनाओं
और नहीं तुम देर लगाओं
नल और नील ने की शुरूआत
बाँट रही थी सेना हाथ
मैंने अपना धर्म निभाया
परमारथ में हाथ बटाया
बालू में लिपटा के शरीर
धो देती थी सागर तीर
तभी राम ने देखा भाई
उमड़ा प्यार यहीं सच्चाई
प्रेम पूर्वक मुझे उठाया
मुदित हो ऊपर हाथ फिराया
वहीं ऊँगलियां हैं ये चारी
जिनको कहते सुन्दर धारी
स्वार्थो से ऊपर उठकर
जब काम किसी के आओगे
सच्ची सुन्दरता के मालिक
जग में तुम बन जाओगे ।